पाठ 11

जीत खेल भावना की

खेल में हार–जीत लगी रहती है। जीतने –हारने की दृष्टि से खेल नहीं खेलना चाहिए। खेल में अच्छा खेल खेलने की, मिल–जुलकर खेलने की भावना प्रमुख रहनी चाहिए। हारने पर न तो जीतनेवाली टीम से ईर्ष्या करने की भावना होनी चाहिए, न जीतने पर हारनेवाली टीम को नीचा दिखाने की भावना होनी चाहिए।

प्रधान अध्यापक जी के ऑफिस के आगे भीड़ लगी हुई थी। कुछ लड़कों ने सुरेश को इतना मारा था कि उसका सिर फूट गया था। सब इस बात को जानते थे कि यह काम महेश और उसके साथियों का है। सुरेश और महेश की दुश्मनी पूरे स्कूल में जाहिर थी। मगर बात इतनी बढ़ जाएगी, इसकी किसी को भी उम्मीद न थी। प्रधान अध्यापक जी के बहुत पूछने पर भी सुरेश ने महेश का नाम नहीं बताया।

प्रधान अध्यापक जी ने एक बार फिर पूछा, ''बताओ सुरेश, यह किसका काम है... उसे जरूर सजा दी जायगी।''

''नहीं सर, मेरा पैर सीढ़ियों से फिसल गया था। इसलिए चोट लग गई।''

मगर प्रधान अध्यापक जी को भनक लग गई थी कि वार्षिकोत्सव की तैयारी करते समय सुरेश और महेश में कुछ कहासुनी हो गई थी। हर बार सभी खेलों में सुरेश अव्वल आता, इस कारण महेश उससे ईर्ष्या करने लगा था। उसके कुछ साथियों ने उसके इतने कान भरे कि वह सुरेश को अपना दुश्मन समझने लगा था।

उसका नतीजा आज सबके सामने था। सुरेश को अस्पताल ले जाकर पट्टी करवा दी गई। साथ ही, सिर में कुछ टाँके भी लगे। फिर उसे घर भेज दिया गया।

दूसरे दिन हाल खचाखच भरा हुआ था क्योंकि प्रधान अध्यापक जी ने विशेष मीटिंग बुलाई थी। वातावरण एकदम शांत था।

प्रधान अध्यापक जी बोले, ''कल हमारे स्कूल में जो घटना हुई है, उससे मुझे गहरा आघात पहुँचा है। मुझे दुख है कि हमारे स्कूल की शिक्षा को कुछ छात्रों ने सही ढंग से ग्रहण नहीं किया।''

महेश और उसके साथियों के चेहरे पीले पड़ गए। उन्हें ऐसा महसूस हो रहा था मानो

शिक्षण–संकेत : बच्चों से खेल के संबंध में चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि खेल में हारना और जीतना लगा ही रहता है। खेल में खेल–भावना का महत्व है। इस कहानी का मुख्य उद्देश्य यही है। पहले एक अनुच्छेद का आदर्श वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। एक–एक विद्यार्थी से थोड़ा–थोड़ा अंश पढ़वाएँ। उच्चारण पर विशेष बल दें। कठिन शब्दों के अर्थ बताते जाएँ और उनका वाक्य प्रयोग विद्यार्थियों से कराएँ। कहानी का सारांश बच्चों से पूछें।

उनकी धमनियों में रक्त जम गया हो। महेश सोच रहा था कि कहीं ऐसा तो नहीं कि सुरेश ने उसका नाम प्रधान अध्यापक जी को बता दिया हो।

'हाय, अब क्या होगा ?' महेश सोच में पड़ गया। सुरेश को मारते वक्त वह इतना हिंसक हो गया, मानो उस पर शैतान सवार हो गया हो। उसने आगा देखा न पीछा, स्टिक से सुरेश के सिर पर कई वार किए। सुरेश जब लहूलुहान हो गया तो डरकर महेश व उसके दोस्त भाग गए।

तभी प्रधान अध्यापक जी की आवाज़ सुनकर महेश की तन्द्रा भंग हुई। वे कह रहे थे, ''मगर सुरेश ने मेरे बहुत पूछने पर भी उस छात्र का नाम नहीं बताया, जो उसे इस हालत में पहुँचाने का जिम्मेदार है। यदि वह छात्र अपनी गलती स्वीकार कर लेता है तो उसे कोई सजा नहीं दी जाएगी अन्यथा पता चलने पर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।''

''हाँ, एक बात और,''प्रधान अध्यापक जी थोड़ा रुककर आगे बोले। ''इस बार वार्षिकोत्सव खेल रद्द किया जाता है। खेल अगर आपस में सहयोग, प्यार की भावना का संचार करने में असफल रहता है तो कोई फ़ायदा नहीं ऐसे आयोजनों का, जो आपस में ईर्ष्या और द्वेष की भावना को जन्म दें। खेल अगर खेल की भावना से खेला जाए तभी अच्छा है। अच्छा, अब आप सब जा सकते हैं।''

सभी छात्रों का उत्साह ठंडा पड़ गया।

उधर महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी। वह ग्लानि के कारण स्वयं से भी नज़रें नहीं मिला पा रहा था। वह सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो उसे सज़ा दिला सकता था। फिर उसने मन–ही–मन अपनी गलती स्वीकार की और प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा।

''सर, मुझे माफ कर दीजिए। मैं ही सुरेश की इस हालत का जिम्मेदार हूँ ,'' कहते हुए महेश की आँखों से आँसू निकल पड़े।

''मैं जानता था कि तुम जरूर आओगे। तुम्हें गलती का अहसास हो गया, यही मैं चाहता था। तुम सुरेश से माफी माँगो, तुमने उसे गहरा आघात पहुँचाया है,'' प्रधान अध्यापक जी बोले।

''सर, एक विनती है आपसे,'' महेश आँसू पोंछते हुए बोला। ''आप वार्षिकोत्सव खेल रद्द न कीजिए। मैं वायदा करता हूँ कि हम खेल को खेल की भावना से ही खेलेंगे। उसे ईर्ष्या का कारण नहीं बनने देंगे।''

''ठीक है,'' प्रधान अध्यापक जी बोले।

नियत समय पर खेलोत्सव शुरू हुए। जैसा हमेशा होता आया था, सुरेश इस बार भी सभी प्रतियोगिताओं में विजयी रहा। सभी शिक्षकों के मन में आशंका थी कि कहीं फिर कोई हादसा न हो, मगर सबकी आशंका के विपरीत महेश आगे बढ़ा और सुरेश से बोला, ''बधाई हो सुरेश, वास्तव में मेहनत ही सफलता की हकदार होती है।''

''तुम ऐसा क्यों सोचते हो,'' सुरेश बोला। अगली बार तुम्हें भी सफलता जरूर मिलेगी। मैं तुम्हें प्रैक्टिस कराऊँगा। बोलो स्वीकार है।''

महेश की आँखों में आँसू आ गए। बोला, ''क्या तुम मेरे दोस्त बनोगे ?''

''क्यों नहीं ?''

सुरेश और महेश दोनों प्रधान अध्यापक जी के पास पहुँचे। प्रधान अध्यापक जी खुश थे कि उनका प्रयास बेकार नहीं गया।

शब्दार्थ

जाहिर	–	प्रकट	लहूलुहान	–	खून से लथपथ
उम्मीद	–	आशा करना	तन्द्रा	–	ध्यान
अव्वल	–	प्रथम, पहला	ईर्ष्या	–	जलन
ख़िलाफ	–	विरोधी, उल्टा, प्रतिकूल	आशंका	–	संदेह, शंका
आघात	–	चोट, मार	हकदार	–	अधिकारी होना, वारिस
ग्रहण	–	लेना, स्वीकार करना	प्रयास	–	प्रयत्न, कोशिश
स्टिक	–	हॉकी खेलने की छड़ी	हादसा	–	दुर्घटना
हिंसक	–	मारनेवाला, हिंसा करनेवाला	खचाखच	–	बिल्कुल जगह न होना
आयोजन	–	किसी कार्य का होना/करना			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सुरेश ने महेश की शिकायत प्रधान अध्यापक जी से क्यों नहीं की ?

प्रश्न 2 प्रधान अध्यापक जी ने वार्षिकोत्सव रद्द करने की बात क्यों की ?

प्रश्न 3 महेश सुरेश से ईर्ष्या क्यों करता था ?

प्रश्न 4 प्रधान अध्यापक जी ने विशेष मीटिंग क्यों बुलाई थी ?

प्रश्न 5 महेश को आत्मग्लानि क्यों हुई ?

प्रश्न 6 क्या महेश ने सुरेश के साथ ठीक किया ? अगर तुम महेश की जगह होते तो क्या करते ?

प्रश्न 7 महेश और सुरेश में से तुमको कौन अच्छा लगा और क्यों ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक श्रुतलेख के लिए एक कहानी बोलें और बच्चे सुनकर लिखें। उसके बाद शिक्षक बारी – बारी से लिखी हुई कहानी पढ़कर सुनाने को कहें।

प्रश्न 1 निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. भनक लग जाना ख. कहासुनी हो जाना ग. आगा देखा न पीछा

घ. चेहरा पीला पड़ जाना ङ. कान भरना च. शैतान सवार होना

पढ़ो और समझो

महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी।

महेश ग्लानि के कारण महेश से भी नजरें नहीं मिला रहा था।

महेश सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो महेश को सजा दिला सकता था।

फिर महेश ने मन–ही–मन महेश की गलती स्वीकार की।

और महेश प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा।

इस अनुच्छेद में 'महेश' शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है जो पढ़ने में खटकता है। इसे निम्नलिखित प्रकार से भी लिखा जा सकता है:

महेश के मन में उथल–पुथल मची हुई थी।

वह ग्लानि के कारण स्वयं से भी नजरें नहीं मिला रहा था।

वह सोच रहा था कि सुरेश चाहता तो उसे सजा दिला सकता था।

फिर उसने मन ही मन अपनी गलती स्वीकार की।

और वह प्रधान अध्यापक जी के पास जा पहुँचा ।

इन पंक्तियों में 'महेश' के स्थान पर 'वह', 'स्वयं', 'उसे', 'उसने', 'अपनी', 'वह' शब्दों का प्रयोग हुआ है। **संज्ञा के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं। 'वह', 'स्वयं', 'उसे', 'उसने', 'अपनी' सर्वनाम शब्द हैं।**

लोभी काका एक बार बीमार हो गया। खर्च के डर से लोभी काका वैद्य से औषधि भी नहीं खरीदना चाहता था। बैगा के पास जाने पर लोभी काका को एक नारियल लाने का हुकुम हुआ। नारियल खरीदने लोभी काका को लोभी काका के गाँव के दुकानदार के यहाँ जाना पड़ा।

प्रश्न 1 उपर्युक्त अवतरण को पढ़ो और रेखांकित के स्थानों पर उचित सर्वनामों का प्रयोग करते हुए अनुच्छेद को पुनः लिखो।

- एक वचन से बहुवचन बनाना–

क. यह आदमी गन्ना लाया था।

ख. यह आदमी गन्ने लाया था। या ये आदमी गन्ने लाए थे।

''क'' वाक्य को बहुवचन में परिवर्तित करके ''ख'' वाक्य बना है।

प्रश्न 2 नीचे लिखे वाक्यों को बहुवचन में परिवर्तित करके पुनः लिखो।

क. बकरी चना खा गई। ख. चरवाहा भैंस चराने गया।

ग. छात्र का उत्साह ठंडा पड़ गया। घ. लेखक ने कहानी लिखी।

- विशेषण–

क. महेश ताजे फल लाया।

ख. सुरेश पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।

ग. रेणु सुंदर लड़की है।

घ. रेखा ने थोड़ा पानी पिया।

ङ सलमा ने एक लीटर दूध माँगा।

इन वाक्यों में 'ताजे', 'पाँचवीं', 'सुंदर', 'थोड़ा', 'एक' क्रमशः फल, कक्षा, लड़की, पानी और दूध' की विशेषता बता रहे हैं। **संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, संख्या, मात्रा आदि बतानेवाले शब्दों को 'विशेषण' कहते हैं।**

प्रश्न 3 अब निम्नलिखित विशेषण शब्दों का प्रयोग करते हुए खाली जगह भरो–

(दस, भारतीय, मीठे, छोटे)

क. रमेश.....मीटर कपड़ा लाया।

ख. राजेश के पास.....फल हैं।

ग. रवि ..... नागरिक है।

घ. राहुल ..... बच्चों को पढ़ाता है।

किसी को सम्मान देने के लिए हम उसके नाम के बाद 'जी' जोड़ देते हैं–जैसे गुरु जी, पिता जी। यह 'जी' शब्द–मूल शब्द से हटकर लिखा जाता है।

रचना

- खेल के आयोजन के साथ किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, उनकी सूची बनाओ।

गतिविधि

- कहानी को नाटक के रूप में तैयार करो और कक्षा में प्रस्तुत करो।
- क्लब बनाएँ –
  - तुम्हें अपने स्कूल में एक क्लब बनाना है, जो स्कूल में खेल – कूद के कार्यक्रमों की तैयारी करेगा।

- इस क्लब में शामिल होने वालों की सूची बनाओ।
- इसे चलाने के बारे में नियम सोचकर लिखो।
- क्या इसे चलाने के लिए नियम जरूरी है या नहीं ? कारण भी बताओ।

योग्यता–विस्तार

- अपने प्रदेश में प्रचलित विभिन्न प्रसिद्ध खेलों और उनके खिलाड़ियों के बारे में जानकारी एकत्रित करो।
- समाचार पत्र में छपे किसी खेल समाचार की कटिंग कक्षा की दीवार पर चिपकाओ।

यह भी समझो

- विशेषण जिसकी विशेषता बताता है, उसे विशेष्य कहते हैं, जैसे–

  क. प्रधान अध्यक्ष पंत जी ने विशेष बैठक बुलाई थी।

  ख. नियत समय पर खेलोत्सव शुरू हुए।

- ऊपर के वाक्यों में –'विशेष बैठक' और 'नियत समय' शब्दों पर ध्यान दो। 'बैठक' की विशेषता 'विशेष' शब्द और 'समय' की विशेषता 'नियत समय' बना रहा है। –'बैठक' और 'समय' विशेष्य कहलाएँगे और 'विशेष' तथा 'नियत' विशेषण।

प्रश्न 5 इस पाठ में से विशेषण और विशेष्य के कोई चार जोड़े चुनकर लिखो।